ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(12): 16-19
www.allresearchjournal.com
Received: 06-10-2020
Accepted: 12-11-2020

डॉ॰ कविता झा
पी.जी.टी., झरियाराज +2 उच्च विद्यालयझरिया, धनबाद, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ॰ कविता झा
पी.जी.टी., झरियाराज +2 उच्च विद्यालयझरिया, धनबाद, झारखण्ड, भारत

पाणिनीयेतर व्याकरणों में रक्ताद्यर्थक तद्धित प्रत्ययों का विवेचन

डॉ॰ कविता झा

सारांश -
पाणिनीयेतर व्याकरणों में देवनन्दी के जैनेन्द्रव्याकरण, चन्द्रगोभी के चान्द्रव्याकरण, शाकटायन के शाकटायन-व्याकरण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमशब्दानुशासन व्याकरण और अनुभूतिस्वरूपाचार्य के सारस्वतव्याकरण में वर्णित रक्ताद्यर्थक-प्रत्ययों का अध्ययन किया गया है।

शब्दकुंजियाँ - रक्ताद्यर्थक, पाणिनि, जैनेन्द्रव्याकरण, देवनन्दी, चान्द्रव्याकरण, चन्द्रगोभी, शाकटायन, हेमचन्द्र, सारस्वतव्याकरण।

1. प्रस्तावना -
संस्कृत व्याकरण का रचनाकार्य अत्यन्त प्राचीनकाल से होता आया है। संस्कृत के प्रकाण्ड वैयाकरण महर्षि पाणिनि के पूर्व भी कई प्रभावशाली वैयाकरण हो चुके थे, किन्तु पाणिनि के व्याकरण की पूर्णता एवम् प्रभावशालिता के सामने उनकी प्रभा विलीन-सी हो गयी और व्याकरण-जगत् में पाणिनीय आभा छा गयी। पुनरपि पाणिनि के उत्तरवर्त्ती युग में भी व्याकरण का रचनाकार्य चलता रहा। यह रचनाकार्य आगे दो धाराओं में प्रवाहित हुआ। पहली धारा में पाणिनीय व्याकरण का ही विवेचनात्मक कार्य हुआ और दूसरी धारा में पाणिनीय व्याकरण की समकक्षता प्राप्त करने के लिए अनेक सम्प्रदाय के अनेक वैयाकरणों ने व्याकरण-शास्त्र की रचनाएँ की।

2. चान्द्रव्याकरण में रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्यय -
आचार्य चन्द्रगोभी ने अपने चान्द्रव्याकरण में 63 सूत्रों के द्वारा 23 अर्थों रक्त, युक्त, दृष्ट, परिवृत, अपूर्ववचन, उद्धृत, शयिता, संस्कृत, पौर्णमासी, देवता, भ्राता, पिता, माता, दुग्ध, समूह, विषय, आदि, प्रयोजन, योद्धा, प्रहरण, क्रिया, अधीते एवं वेद का उल्लेख किया है। यहाँ वर्त्तन अर्थ का अभाव है। आचार्य चन्द्रगोभी ने 'रक्त' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'युक्त' अर्थ में 2 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'दृष्ट' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 3 प्रत्ययों, 'परिवृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'अपूर्ववचन' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'उद्धृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'शयिता' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'संस्कृत' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'पौर्णमासी' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 2

प्रत्ययों, 'देवता' अर्थ में 11 सूत्रों के द्वारा 9 प्रत्ययों, 'वर्त्तन' अर्थ में 2 वार्त्तिकों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'भ्राता', 'पिता' और 'माता' - इन तीनों अर्थों में 1 ही निपातन सूत्र के द्वारा, 'समूह' अर्थ में 13 सूत्रों के द्वारा 14 प्रत्ययों, 'विषय' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'योद्धा' एवम् 'प्रयोजन' - इन दोनों अर्थों को 1 ही सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, ' प्रहरण' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'क्रिया' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'अधीते' एवं 'वेद' अर्थ में 7 सूत्रों के द्वारा 6 प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। सूत्र एवम् प्रत्ययों की रचना-शैली में नवीनता नहीं है। प्रत्यय प्रायः सानुबन्ध पठित होने के कारण स्वरूप में किञ्चत भिन्न हैं, किन्तु निरनुबन्ध अवस्था में समान ही हैं। यहाँ समेकित रूप से 10 गणों की चर्चा है। जिनमें से समूह अर्थ में 4, विषय अर्थ में 3, अधीते एवं वेद अर्थ में 3 गण हैं। इनकी व्याकरण सम्बन्धी संज्ञायेँ बिल्कुल नवीन हैं।

3. चान्द्रव्याकरण में रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्यय -

आचार्य चन्द्रगोभी ने अपने चान्द्रव्याकरण में 63 सूत्रों के द्वारा 23 अर्थों रक्त, युक्त, दृष्ट, परिवृत, अपूर्ववचन, उद्धृत, शयिता, संस्कृत, पौर्णमासी, देवता, भ्राता, पिता, माता, दुग्ध, समूह, विषय, आदि, प्रयोजन, योद्धा, प्रहरण, क्रिया, अधीते एवं वेद का उल्लेख किया है। यहाँ वर्त्तन अर्थ का अभाव है। आचार्य चन्द्रगोभी ने 'रक्त' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'युक्त' अर्थ में 2 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'दृष्ट' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 3 प्रत्ययों, 'परिवृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'अपूर्ववचन' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'उद्धृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'शयिता' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'संस्कृत' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'पौर्णमासी' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'देवता' अर्थ में 12 सूत्रों के द्वारा 8 प्रत्ययों, 'भ्राता', 'पिता' और 'माता' - इन तीनों अर्थों में 1 ही निपातन सूत्र के द्वारा, 'दुग्ध' अर्थ में 1 वार्त्तिक के द्वारा 3 प्रत्ययों, 'समूह' अर्थ में 19 सूत्रों के द्वारा 14 प्रत्ययों, 'विषय' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'आदि' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'योद्धा' एवम् 'प्रयोजन' - इन दोनों अर्थों को 1 ही सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, ' प्रहरण' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'क्रिया' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'अधीते' एवं 'वेद' अर्थ में 6 सूत्रों एवं 5 वार्त्तिकों के द्वारा 4 प्रत्ययों का विधान किया है। सूत्र एवम् प्रत्यय-रचना-शैली पाणिनि-सदृश है। प्रत्ययों के स्वरूप एवम् अर्थ पाणिनि के अनुकूल ही हैं। यहाँ समेकित रूप से 9 गणों की चर्चा है। जिनमें से समूह अर्थ में 3, विषय अर्थ में 3 तथा अधीते एवं वेद अर्थ में 3 गणों की चर्चा है। इसमें 'समूह' अर्थ में पठित खण्डिकादि का अभाव है।

4. शाकटायन-व्याकरण में रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्यय -

आचार्य शाकटायन ने अपने शाकटायनव्याकरण में 72 सूत्रों के द्वारा 22 अर्थों - रक्त, युक्त, दृष्ट, परिवृत, उद्धृत, शयिता, संस्कृत, पौर्णमासी, देवता, भ्राता, पिता, माता, दुग्ध, समूह, विषय, आदि, प्रयोजन, योद्धा, प्रहरण, क्रिया, अधीते एवं वेद का उल्लेख किया है। यहाँ 'अपूर्ववचन' तथा 'वर्त्तन' अर्थों का अभाव है। शाकटायन-व्याकरण में रक्ताद्यर्थक प्रकरण का आरम्भ 'रक्त' आदि 24 अर्थों में से 'समूह' अर्थ में विहित होने वाले सूत्रों से ही होता है। अतः इसे रक्ताद्यर्थक न कहकर 'समूहाद्यर्थक' भी कहा जा सकता है। इस व्याकरण में रक्त आदि विभिन्न अर्थों में विहित होने वाले सूत्र विभिन्न अध्यायों के विभिन्न पादों में सर्वत्र बिखरे पड़े हैं, जिसे पाणिनीय सम्प्रदाय के अनुकूल करने के लिए एक स्थान पर एकत्र किया गया है। आचार्य शाकटायन ने 'रक्त' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'युक्त' अर्थ में 5 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'दृष्ट' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 3 प्रत्ययों, 'परिवृत' अर्थ में 2 सूत्रों के द्वारा 1 प्रत्ययों, 'उद्धृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'शयिता' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'संस्कृत' अर्थ में 2 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'पौर्णमासी' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'देवता' अर्थ में 9 सूत्रों के द्वारा 7 प्रत्ययों, 'भ्राता' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'पिता' और 'माता' - इन दोनों अर्थों में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'दुग्ध'

अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 3 प्रत्ययों, 'समूह' अर्थ में 17 सूत्रों के द्वारा 15 प्रत्ययों, 'विषय' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'आदि' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'योद्धा' एवम् 'प्रयोजन' - इन दोनों अर्थों को 1 ही सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, ' प्रहरण' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'क्रिया' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'अधीते' एवं 'वेद' अर्थ में 12 सूत्रों के द्वारा 5 प्रत्ययों का विधान किया है। शाकटायन-व्याकरण में वार्त्तिक का सर्वथा अभाव है। यहाँ समेकित रूप से 8 गणों की चर्चा है। इसमें पाणिनीय-व्याकरण में 'समूह' अर्थ में पठित खण्डिकादि, खलादि तथा अधीते एवं वेद अर्थ में पठित वसन्तादि एवं क्रमादि गणों का अभाव है। किन्तु शाकटायन-व्याकरण में एक विशेष गण 'वङ्गादि' का उल्लेख मिलता है। सूत्र स्वरूप की दृष्टि से पाणिनि के अनुकूल हैं। प्रत्यय स्वरूप की दृष्टि से किञ्चत् भिन्न हैं, किन्तु अर्थ की दृष्टि से अभिन्न हैं।

5. सिद्धहेमशब्दानुशासनव्याकरण में रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्यय -

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने सिद्धहेमशब्दानुशासन में 84 सूत्रों के द्वारा 21 अर्थों - रक्त, युक्त, दृष्ट, परिवृत, उद्धृत, शयिता, संस्कृत, पौर्णमासी, देवता, भ्राता, पिता, दुग्ध, समूह, विषय, आदि, प्रयोजन, योद्धा, प्रहरण, क्रिया, अधीते एवं वेद का उल्लेख किया है। यहाँ अपूर्ववचन, वर्त्तन एवम् माता अर्थों का अभाव है। आचार्य हेमचन्द्र ने 'रक्त' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'युक्त' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'दृष्ट' अर्थ में 5 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'परिवृत' अर्थ में 2 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'उद्धृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'शयिता' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'संस्कृत' अर्थ में 6 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'पौर्णमासी' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'देवता' अर्थ में 11 सूत्रों के द्वारा 6 प्रत्ययों, 'भ्राता'अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'पिता' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'दुग्ध' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 3 प्रत्ययों, 'समूह' अर्थ में 16 सूत्रों के द्वारा 15 प्रत्ययों, 'विषय' अर्थ में 4 सूत्रों के द्वारा 4 प्रत्ययों, 'आदि' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'योद्धा' एवम् 'प्रयोजन' - इन दोनों अर्थों को 1 ही सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, ' प्रहरण' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'क्रिया' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'अधीते' एवं 'वेद' अर्थ में 14 सूत्रों के द्वारा 6 प्रत्ययों का विधान किया है। यहाँ समेकित रूप से 9 गणों की चर्चा है। जिनमें से समूह अर्थ में 4, विषय अर्थ में 2 तथा अधीते एवं वेद अर्थ में 3 गणों की चर्चा है। इनके व्याकरण के ऊपर सर्वाधिक प्रभाव शाकटायन का है। प्रत्यय शैली इनकी अपनी है। प्रत्ययार्थ पाणिनि-सदृश हैं।

6. सारस्वतव्याकरण में रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्यय -

अनुभूतिस्वरूपाचार्य ने अपने सारस्वतव्याकरण में 14 सूत्रों के द्वारा 7 अर्थों - परिवृत, देवता, भ्राता, पिता, माता, दुग्ध एवं समूह का उल्लेख किया है। इसमें रक्त, युक्त, दृष्ट, अपूर्ववचन, उद्धृत, शयिता, संस्कृत, पौर्णमासी, वर्त्तन, विषय, आदि, प्रयोजन, योद्धा, प्रहरण, क्रिया, अधीते एवं वेद अर्थों का अभाव है। सारस्वत-व्याकरण में 'परिवृत' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'देवता' अर्थ में 3 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, 'भ्राता' अर्थ में 2 सूत्रों के द्वारा 2 प्रत्ययों, पिता एवम् माता इन दोनों अर्थों में 1 सूत्र के द्वारा 1 प्रत्यय, 'दुग्ध' अर्थ में 1 सूत्र के द्वारा 3 प्रत्ययों एवम् 'समूह' अर्थ में 6 सूत्रों के द्वारा 5 प्रत्ययों का उल्लेख किया गया है। सूत्र-रचना-शैली तथा क्रम पाणिनि से भिन्न हैं।

7. निष्कर्ष -

इस अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्रायः सभी पाणिन्युत्तर व्याकरणों में रक्ताद्यर्थक-तद्धित-प्रत्ययों की संख्या लगभग समान ही है। केवल सारस्वत व्याकरण में यह संख्या बहुत न्यून है। निरनुबन्ध की दृष्टि से प्रायः प्रत्ययों के स्वरूप में भी समानता है।

8. सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची -

1. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त, अष्टाध्यायीभाष्य प्रथमावृत्ति (1964), रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर, पंजाब

2. चन्द्रगोभी, चान्द्रव्याकरणम् (1961), के॰सी॰ चटर्जी, डेकन कॉलेज, पूना
3. देवनन्दी, जैनेन्द्रव्याकरणम् (1956), सम्पा॰ शम्भुनाथ त्रिपाठी, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
4. शाकटायन, शाकटायनव्याकरणम् (1971), सम्पा॰ शम्भुनाथ त्रिपाठी, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी
5. अनुभूतिस्वरूपाचार्य, सारस्वतव्याकरणम् (1971), चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी